समीक्षा

## सबके लिए वेद – वेदों की सार्वभौमिकता का संदेश

**ईश नारायण जोशी**

वेद भारतीय दर्शन और धर्म के प्राण हैं। वे हमारे अध्यात्म के मूल हैं । ये भारतीय साहित्य के ही सर्वप्रथम ग्रन्थ नहीं हैं वल्कि मानव इतिहास में इनसे प्राचीनतम कोई अन्य ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं। अपनी प्राचीनता के कारण ये केवल हिन्दुओं की विषय वस्तु न रहकर विश्व साहित्य की बहुमूल्य संपत्ति बन गए हैं। श्री प्रभुदयाल जी मिश्र ने अपनी इस समीक्ष्य पुस्तक मे इनके रचनाकाल के विषय में सप्रमाण बताया गया है कि एतिहासिक दृष्टि से इनकी रचना 6000 वर्ष ईसा पूर्व हुई थी।
इनका ऋषियों ने समाधि की अवस्था में साक्षात्कार किया। वैदिक ऋषि इसलिए द्रष्टा कहे जाते हैं । इन्हें गुरु–शिष्य परम्परा की स्मृति में सुरक्षित रखा गया, अतः इन्हें श्रुति कहा गया।

वेदों की विषयवस्तु व्यापक है। जहां ऋग्वेद में प्रार्थना, दर्शन और साहित्य है, वहीं अथर्ववेद में समाज, राजनीति, परिवार, दर्शन, विज्ञान, संसार की उत्पत्ति, जीवन, मृत्यु, जीवन का उद्‌देश्य, साहित्य, इतिहास, भूगोल, ज्योतिष, औषधि एवं जल यात्रा आदि सभी का वर्णन है। यजुर्वेद में यज्ञ, राष्ट्रीयता और कर्मकांड है तो सामवेद में संगीत और संस्कृति है। वैदिक प्रार्थना में ऋषि प्रायः सामूहिक कल्याण की कामना करता है :–

देवताओ कान से हम सुनें
शुभ कल्याण कर
आंख से हम लखें शुभ
सुर पूज्य
अंग दृढ हों
प्रार्थनारत रह सदा
हम करें सम्पूर्ण
अपनी आयु के शत वर्ष    पृष्ठ 33

वेद का धर्म कोई पंथ अथवा संप्रदाय न होकर आदर्श मानवीय सम्बन्धों की सनातन श्रंखला है। इनमें श्रद्धा, तप, दया, दान, शांति आदि गुणों पर जोर दिया गया है। ऋषि प्रार्थना करता है – अच्छे, शुभ विचार बिना किसी बाधा के उसके पास सभी दिशाओं से आऐं –
श्रेष्ठ हिंसा रहित, अपराजेय
ऊर्ध्व–गामी कर्म
आयें निकट
हम सबके
दिशाओं से सभी  –पृष्ठ 41

मिश्र जी ने पुस्तक में चारों वेदों के यथा संदर्भ सूक्तों को हिन्दी अनुवाद सहित दिया है। इनसे हमें वेद के उच्च नैतिक संदेश के साथ–साथ इनके काव्यात्मक पक्ष का भी परिचय प्राप्त हो जाता है।

ऋग्वेद– प्रार्थना, संवोधन, संवाद, दर्शन और संवेदना की तरल कविता ऋग्वेद है । पुरुष, नासदीय , विश्वकर्मा, ज्ञान सूक्त का दर्शन, सरमा–पणि, नदी, यम–यमी और उर्वशी–पुरूरवा सूक्तों के संवाद तथा उषा, सूर्या विवाह और पर्जन्य आदि सूक्तों का प्रकृति वोध वेद के द्रष्टा ऋषि–यों की देश और कालातीत चेतना के अक्षय प्रमाण हैं । कविता की निर्वैयिकता के वर्तमान आलोचना सिद्वान्त की एक अद्‌भुत झलक ऋग्वेद के दशम मण्डल के 71वें सूक्त के तीसरे मंत्र में इस प्रकार देखी जा सकती है । पर्जन्य द्वारा वर्षा के प्रभाव का वर्णन कुछ इस प्रकार मिलता है–

'' खोल दो जल कोष अपना
वह बृहत्
अब भूमि पर
बहें नदियां प्रचुर जल पूरित
अघायें धेनु
समुचित पिऐं जल – पृष्ठ 34

यजुर्वेद–ऐसे मंत्रों का संग्रह है जो याज्ञिक पूजा का अभिप्राय रखते हैं। इस वेद के दो भाग हैं शुक्ल और कृष्ण। ऋग्वेद के रुद्र यजुर्वेद में शिव के रूप में लोक कल्याण कार्य ले लेते हैं। इसके शिव संकल्प के सूक्त में मनोविज्ञान की सूक्ष्मता में मन की शक्तियों का अद्‌भुत् विश्लेषण किया गया है। इसमें असीम क्षमताओं वाले मन से ऋषि की प्रार्थना है कि वह शिव संकल्प का साधन बने। इसी वेद का चालीसवां अध्याय ईशावास्योपषनिषद् है जो भारतीय दर्शन और आध्यात्म का प्रतिनिधि पक्ष प्रस्तुत करता है।

सामवेद – गीतात्मक है। विधि पूर्वक साम गान करने वाला ईश्वर को प्राप्त कर लेता है। स्वर, साम की आत्मा है।

अथर्ववेद – भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही सुखों का समन्वय करता है। इससे धर्म, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थी की सिद्ध हैं। इसमें लगभग 90 रोगों का वर्णन है । उपचार के मंत्र भी बताए गए हैं। इस वेद के बारहवें अध्याय में धरती माता की काव्यात्मक प्रार्थना की गई हैं। यह विश्व साहित्य की श्रेष्ठतम कविता है। सूक्ष्म मानवीय संवेदनाओं के आकार इसमें जैसे रूपायित हो गए हैं । कोई आश्चर्य नहीं कि वेद के इसी ललित पक्ष से प्रभावित होकर मिश्र जी 'वेद' में 'कविता' की खोज करते हुए 'वेद की कविता' पूर्व में लिख चुके हैं ।

वेदों में राष्ट्रीय भावना और विश्व मानवता परक भावों का पुस्तक में स्थान स्थान पर उल्लेख मिलता है । अथर्ववेद के काण्ड 1 के 29 वें सूक्त में ऋषि वशिष्ठ राष्ट्र जय की कुछ एंसी कामना करते हैं–

उसे हम घेर कर, अभिभूत कर
पराजित करदें

हमारे राष्ट्र को जय मिले
ऐसी विजय– मणि
तुम लो मुझे बांधो– पृष्ठ 146

विश्व मानवता का जय–घोष वेद का शाश्वत स्वर है । विश्व मानवता इसकी सनातन पहचान है । अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में पुथ्वी की परिकल्पना एक ऐसे घर के रूप में की गई है जिसमें विविध प्रकार के लोग एक साथ निवास करते हैं–

विविध– धर्मी
विविध– भाषा
विविध– भूतल
मानवों का
एक तुम ही घर अटल
हे गाय कपिला !
सरल, सीधी
हमारे हित
सहस–धारा
दुग्ध–धन की
बनो पृथ्वी ! – पृष्ठ 144

वस्तुतः मिश्र जी ने चारों वेदों के विस्तृत और बहु आयामी ज्ञान भंडार को सारतः समेट कर इस पुस्तक में सबके समझने योग्य उपलब्ध कराने की चेष्टा की है। इस प्रकार इसकी जहां स्वयं की अपनी सीमायें हैं वहीं इस साहसपूर्ण अभियान के लिए मिश्र जी बधाई के पात्र भी हैं ।

ई–4/312
अरेरा कालोनी, भोपाल –6

सबके लिये वेद
प्रभुदयाल मिश्र
प्रकाशक–बुक्स फार आल
ए–6, नीमाड़ी कमर्शियल सेंटर
अशोक विहार फेज चार,
दिल्ली – 110052
मूल्य – 95/– रू.